ISSN: 2347-2723 IMPACT FACTOR : 3.3754(UIF) VOLUME - 5 | ISSUE - 1 | AUGUST - 2017

REVIEW OF LITERATURE

आधुनिक सन्दर्भ में सूरदास की प्रासंगिकता

Renu Bala D/O Prem Kumar
Assistant Professor D.A.V College, Abohar Village Mammu Khera , Dist&Teh.Fazilka , State Panjab.

प्रस्तावना :-

महाकवि सूरदास हिन्दी साहित्य के उन महाकवियों में है जिनके ऊपर उसका गौरव टिका हुआ है। सूरदास का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब हिन्दु जाति विदेशी आक्रमणकारियों से संत्रस्त होकर एकदम निराश और विषण्ण हो चुकी थी। ऐसे ही समय सूरदास ने त्रिभुवन – मोहन भगवान् कृष्ण की लीला–माधुरी का गान करके हिन्दु जाति को नवस्फूर्ति प्रदान की और उसका मन उस पर ब्रह्म के माधुर्य स्वरूप में रमाकर बहुत बड़ा आश्वासन प्रदान किया। सूर की सरस वाणी से भारत के असंख्य सूखे हृदय हरे हो उठे और तद्युगीन भग्नाश जनता को जीने का नवीन उत्साह मिला।

सूरकाव्य का जब हम आधुनिक संदर्भो में विश्लेषण करने का प्रयास करते है, तो पाते हैं कि आधुनिक सन्दर्भो में भी सूर का काव्य पूर्णतः प्रासंगिक है क्योंकि आज भी हमारे देश की स्थिति वही है, जो सूर युग में थी। बेशक हमारा देश आज राजनीतिक रूप से स्वतंत्र है, देश में शिक्षा व ज्ञान –विज्ञान का भरपूर विस्तार हुआ परन्तु वास्तविकता यह है कि इस देश की मूलभूत सोच आज भी वैसी ही दिखाई देती है, जैसी सूर युग में थी। आज देश में अप्रेम, अमैत्री संभवतः सूर युग से भी अधिक बढ़ गई है। दुष्ट शक्तियाँ नई–नई ताकतों के साथ अपना सिक्का जमा रही है। धार्मिक अत्याचार, सगुण–निर्गुण का विवाद, राजनीतिक धृष्टता आदि बढ़ रहे है, अतः आज पुनः इन बुराईयों के शमन हेतु सूरकाव्य जैसा अमृत रस प्रासंगिक हो उठा है।

आधुनिक संदर्भो में सूरकाव्य की प्रासंगिकमा को निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा समझा जा सकता है–

दुष्ट संहार– सूरदास ने अपने काव्य में द्वापर युग के केस, अघासुर, पूतना, बकासूर, तृणावर्त आदि दुष्ट राक्षसों का भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा संहार करवाकर प्रतीक रूप में अपने युग की आततायी शक्तियों का संहार करने की बात उठाई थी। आज आधुनिक संदर्भ में वैसे मायावी राक्षस तो नहीं है, परन्तु देश में भ्रष्टाचार, महँगाई, आतंकवाद जैसे क्रूर राक्षस देश के कोने–कोने में विद्यमान है। अतः सूरकाव्य के भगवान कृष्ण जैसे नायक की आज भी देश को नितांत आवश्यकता है, जो देश से इन दुष्ट–ताकतों को हटा सके। 'सूरसागर' में सूरदास जी श्रीकृष्ण के इसी दुष्ट संहारक रूप का वर्णन करते हुए लिखते भी है–

''गहयों कर स्याम भुज मल्ल अपने धाइ, झटकि लीन्हों तुरंत–पटकि धरनी।
भटकि अति शब्द भयौ, खटक नृप के हियैं, अटकि प्राननि परयौ चटक करनी।
मल्ल जेजे रहे सबै मोर, तुरंत असुर जोधा सबै तेउ संहारे।
धाइ दूतनि कहयो, मल्ल कोउन रद्यौ, सूर बलराम हरि सब्र पछारें।''

प्रेम भावना का विस्तार– सूरदास ने जिस युग में अपने काव्य की रचना की, उस युग में उन्होनें यह अवश्यमयी देखा कि समज में प्रेम के नाम पर छल, धोखा, फरेब और व्याभिचार का बोलबाला है। आज का युग संभवतः सूर युग से भी अधिक विद्रूप है। राधा–कृष्ण के अलौकिक व उदात्त प्रेम काव्य की रचना करके तत्कालीन समाज को प्रेम का महत्व को समझाया। 'प्रेम' आज कोई गंभीर साहित्यिक शब्द नहीं बल्कि हल्का फुल्का और बाजार में बिकने वाले किसी सस्ते सामान की तरह प्रयोग होने वाला शब्द बन गया है, अतः आज के संदर्भो में पुनः राधा–कृष्ण के से पवित्र प्रेम, आचरण की समाज को अत्यधिक आवश्यकता है। राधा–कृष्ण के प्रेम को धन्य मानते हुए सूरदास जी अभिव्यंजित करते है–

"पुनि–पुनि कहति हँ ब्रज नारि।
धन्य बड़ भागिनी राधा, तेरै बस गिरधारि।
धन्य नंदंकुमार, धनि तुम धन्य तेरी प्रीति।
धन्य दोउ तुम नवल जोरी, कोक कलानि जीति।"

मैत्री भावना का विस्तार– सूर–युग में प्रेम के नाम पर छल कपट,, धोखा इत्यादि के साथ मित्रता के नाम पर भी धोखा, स्वार्था का बोलबाला था। राजा से लेकर प्रजा तक में सच्ची मित्रता का अभाव था। अतः मैत्री भावना के प्रसार हेतु सूरदास जी ने कृष्ण–सुदामा की सच्ची मैत्री का प्रसंग रचकर अपने सच्चे साहित्यकार होने का परिचय दिया था, वह आज के घोर स्वार्थ भरे युग में और भी अधिक प्रांसगिक हो उठा है। आज की मित्रता पूर्ण रूप से स्वार्थो पर आधारित है। सूरदास जी ने कृष्ण–सुदामा की सच्ची मैत्री का वर्णन इस प्रकार किया है–

"ऐसी प्रीति को बलि जाऊँ।
सिंहासन तजि चले मिलन कौ। सुनत सुदामा नाउँ।

वात्सल्य–भावना का विस्तार – आज की आधुनिक जीवन शैली, अत्यधिक धन लाभ की सोच तथा पति–पत्नी दोनों के कामकाजी होने के कारण आज का बचपन न केवल माता–पिता की देखभाल और प्रेम–प्यार के अभाव में सूना हो रहा है, अपितु प्यार के नाम पर सुविधाओं के जुटाव और अकेलेपन में फंसकर अनैतिकता का भी शिकार हो रहा है। ऐसे में सूरकाव्य में वर्णित वात्सल्य भाव की आज के समाज को नितांत आवश्यकता है। ताकि बच्चा मां से लोरी सुन सके तथा पिता के द्वारा ऊंगली पकड़कर चलना सीख सके। सूरकाव्य आज भी माताओं में वातसल्य भाव उत्पन्न करता हुआ कहता है–

"जसोदा हरि पालनै झुलावै।
हलरावै दुलराइ मल्हावै, जोई–जोई कछु गावै
मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहै न आनि सुवावै
तूं काहै नहि बेगहि आवै, तोकी कान्ह बुलावै।"

अछूतोद्वार– सूरकाव्य जिस युग में रचा गया, उस समय भारतीय समाज में छुत–छात, जाति–पाति को बोलबाला था। आज भी बेशक हम स्वतंत्र हो गये हैं, देश में छुत–छात आदि के विरूद्ध विभिन्न कानून बना दिये गये हैं। किन्तु वास्तविकता इसके विपरित है। आज जाति–पाति के नाम पर केवल वोट ही नहीं मांगे जाते अपितु अछुतों के साथ दुर्व्यव्यवहार भी किया जाता है। ऐसे में सूर द्वारा रचित कृष्ण का शुद्र जाति की कुब्जा से प्रेम तथा विभिन्न जाति–पाति के ग्वाल बालों के साथ परस्पर बाल सुलभ हठ व प्रेम के साथ खेलना अछुतोद्वार का अनुपम प्रमाण है–

"खेलते मैं को काको गुसैयां।
हरि होर जीते श्री दामा, घर बस ही कँत करत रिसैयाँ।
जाति–पाति हमतै बड़ नाहिं नाही बसत तुम्हारी छैयाँ।

अति अधिकार जनावत यातै, जातै अधिक तुम्हारी गैयाँ।

स्त्री विमर्श– सूर युग में स्त्री की दशा अच्छा नही थी। आज देश की स्वतंन्त्रता के बाद कहने को तो स्त्री पुरूष के साथ कँधे से कँधा मिलाकर चल रही है, उसने चाँद तक का सफर तय कर लिया है। परन्तु आज भी वास्तव में स्त्री की दशा दयनीय ही है। वह न केवल बाहरी हिंसा, यौन– शोषण , छेड़छाड आदि की शिकार है। अपितु घरेलु हिंसा की भी शिकार है। ऐसे में आज भी सूरकाव्य सर्वथा प्रासंगिक है जो अपने नायक श्री कृष्ण के होते नारी–सुरक्षा व नारी सम्मान का भाव हर पुरूष में जाग्रत करना चाहते हैं। स्त्री मर्यादा के संबंध में वैसे तो 'सूरसागर' में अनेक प्रसंग उल्लेखनीय है परन्तु यहाँ रूकमणी की प्रार्थना पर भगवान श्रीकृष्ण का उसकी सहायतार्थ तुरंत दौड़कर जाने को प्रसंग दृष्टव्य है–

'' सुनत हरि रूकमणी कौ संदेस,
चढि रथ चले विप्र को संग लै, कियौ न गेह प्रवेस
बारंबार बिप्र को पूँछत, कुँवरि बचन सो सुनावत
दीन बन्धु करूणानिधान सुनि, नैन नीर भरि आवत।''

निर्गुण–सगुण के विवाद समाप्ति हेतु– सूर समय में एक ओर संत कवि निर्गुण–निराकार ईश्वर की उपासना और योग साधना पर बल दे रहे थे, दूसरी ओर रामभक्त व कृष्ण भक्त कवि सगुण साकार ईश्वर की भक्ति पर बल दे रहे थे। आज भी देश में निर्गुण–सगुण का विवाद अनेक धार्मिक मत–मतांतरों में उलझा हुआ है। धर्म–भक्ति ना जाने कितने संप्रदायों में उलझ गए हैं। ऐसे में एक बार पुनः सूरकाव्य जैसा जोरदार, तर्कपूर्ण काव्य भारत भूमि के लिए आवश्यक हो गया है, जो लोगों के हृदयों से विभिन्न मत–मतांतरों का भूत निकाल कर एक– निष्ठ भाव से ईश्वर की उपासना की ज्योति जला सके। सूरकाव्य में यह कार्य सूर की गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने एकनिष्ठ प्रेम को दर्शाकर तथा योग–साधना को सतर्क अनुपयोगी सिद्ध करके बखूबी किया है। निर्गुण भक्ति का संदेश देने वाला उद्धव व गोपियों के तर्कों को सुनकर स्वयं सगुण का उपासक हो जाता है तथा श्री कृष्ण से जाकर कहता है–

'' ब्रज मैं एकै धरम बद्यौ
स्त्रुति सुमृति औ बेद पुराननि, सबै गोविंद कद्यौ,
बलक वृद्ध तरून अबलनि कौ, एक प्रेम निरबद्यौ
सूरदास प्रभु छाँडि जमुन जल, हरि की सरन गद्यौ।''

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि आधुनिक संदर्भों में भी सूरकाव्य नितांत प्रांसगिक है। यह दुष्टता, दासता, युद्ध, भ्रष्टाचार, जाति–पाति, अछुत भावना आदि को पराभूत करने एवं प्रेम, मैत्री, सहानुभूति, ममत्व, अपनत्व आदि भावनाओं का प्रादुर्भाव करने हेतु हर युग में प्रासंगिक ळें

संदर्भ–

सूरदास– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
सूरसागर सार सटीक– सम्पादक डॉ धीरेन्द्र वर्मा
महाकवि सूरदास– जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल
सूर एवं तुलसी की सौन्दर्य भावना– डॉ बद्रीनारायण
सूरदास– सं हरबंस लाल शर्मा क्षौत्रिय